वाट्सएप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 30 | शनिवार 25 मई 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने की मौसमी बीमारियों और हीटवेव प्रबंधन की समीक्षा

तीन दिन में व्यवस्थाएं सुचारू करने के निर्देश शिकायत मिली तो होगी सख्त कार्रवाई

जयपुर. शाबाश इंडिया

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने कहा कि हीटवेव को लेकर राजस्थान रेड अलर्ट श्रेणी में है और मौसम विभाग ने आगामी समय में भी अत्यधिक गर्मी एवं लू की चेतावनी दी है। ऐसे में प्रदेश का समस्त चिकित्सा प्रबंधन संवेदनशीलता के साथ हीटवेव से बचाव एवं उपचार की पुख्ता व्यवस्थाएं सुनिश्चित करे। अस्पतालों में कूलर, पंखे, एसी, वाटर कूलर आदि आवश्यक रूप से क्रियाशील रहें। जहां भी हीटवेव को लेकर आवश्यक व्यवस्थाओं में गेप है, वहां 3 दिन के भीतर सम्पूर्ण व्यवस्थाएं सुचारू करें, अन्यथा जिम्मेदार अधिकारी और कार्मिक के विरूद्ध सख्त एक्शन लिया जाएगा। सिंह शुक्रवार को स्वास्थ्य भवन में वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से मौसमी बीमारियों एवं हीटवेव प्रबंधन को लेकर समीक्षा बैठक को सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि मौसमी बीमारियों एवं हीटवेव प्रबंधन को लेकर चिकित्सा संस्थानों में किसी तरह की कमी नहीं रहे। किसी भी स्तर पर लापरवाही के कारण मरीजों को होने वाली असुविधा बर्दाश्त नहीं की जा सकती। उन्होंने संयुक्त निदेशक जोन को निर्देश दिए कि मौसमी बीमारियों एवं हीटवेव संबंधी व्यवस्थाओं की मॉनिटरिंग के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किए जाएं।

डेथ ऑडिट कमेटी की जांच के बाद ही हो हीट स्ट्रोक से मौतों की रिपोर्टिंग: सिंह ने कहा कि चिकित्सा संस्थानों में होने वाली मौतों की डेथ ऑडिट कमेटी द्वारा प्रोटोकॉल के अनुसार जांच की जाए। इसके बाद ही हीट स्ट्रोक से होने वाली मौतों की आईएचआईपी पोर्टल पर रिपोर्टिंग की जाए। उन्होंने कहा कि किसी रोगी के मृत्यु के कई कारण हो सकते हैं, इसलिए डेथ ऑडिट कमेटी की रिपोर्ट के बाद ही यह घोषित किया जाए कि मौत का कारण हीट स्ट्रोक है। सिंह ने मौसमी बीमारियों से संबंधित केसों की नियमित रिपोर्टिंग करने एवं आमजन को जागरूक करने के लिए निरन्तर आईईसी गतिविधियां किए जाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जिन जिलों में डेंगू के केस ज्यादा सामने आए हैं, वहां विशेष सतर्कता बरती जाए। मौसमी बीमारियों की मॉनिटरिंग के लिए किए गए नवाचार ओडीके एप पर आई शिकायतों के निस्तारण के लिए विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए जाएं।

90 प्रतिशत चिकित्सा संस्थानों में व्यवस्थाएं चाक-चौबंद

निदेशक जनस्वास्थ्य, डॉ. रवि प्रकाश माथुर ने बैठक में बताया गया कि हीटवेव को लेकर मार्च माह से ही ट्रेनिंग, ऑरियेंटेशन, कार्यशाला आदि कार्यक्रम शुरू कर दिए गए थे। सभी चिकित्सा संस्थानों को तैयारियों के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए थे एवं अस्पतालों में आवश्यक संसाधनों को लेकर अप्रेल माह में ही गेप एनालिसिस कर लिया गया था। इन तैयारियों के कारण जिला अस्पताल से लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों तक करीब 3500 चिकित्सा संस्थानों में से 90 प्रतिशत में व्यवस्थाएं चाक-चौबंद स्थिति में है। शेष 10 प्रतिशत में भी अधिकारियों द्वारा वैकल्पिक सुविधाएं सुनिश्चित कर ली गई हैं।

पाली में मां-बेटे की मौत हीट स्ट्रोक के कारण नहीं

बैठक में अवगत कराया गया कि पाली जिले के देसूरी ब्लॉक के गुडा मंगलियान गांव में मां-बेटे की मृत्यु भीषण गर्मी के कारण नहीं हुई है। गांव के 38 वर्षीय समन्दर सिंह घर पर सो रहे थे। शरीर में हलचल नहीं देखकर परिवार वाले उन्हें सादड़ी के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले गए, जहां जांच के बाद चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने पोस्टमार्टम के लिए भी मना कर दिया। मृतक में हीट स्ट्रोक से संबंधित कोई लक्षण नहीं पाया गया था। इसी प्रकार समन्दर सिंह की 80 वर्षीय मां राजू कंवर पहले से ही हृदय रोगी थी। उन्हें सांस लेने में परेशानी और छाती में दर्द की शिकायत के बाद 23 मई को सादड़ी के राजकीय चिकित्सालय में भर्ती कराया गया था। उनकी 24 मई को उपचार के दौरान मृत्यु हो गई।

आरएमआरएस की बैठकें कर तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा करें

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने निर्देश दिए कि तात्कालिक आवश्यकताओं को देखते हुए आरएमआरएस की बैठक तुरंत कर जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने बताया कि आचार संहिता के चलते आरएमआरएस की बैठकें नहीं हो पा रही थीं। इसके चलते चिकित्सा संस्थानों में आवश्यक संसाधनों की खरीद एवं अन्य कार्य बाधित हो रहे थे, लेकिन तात्कालिक आवश्यकताओं को देखते हुए चुनाव आयोग की सहमति के अनुसार ये बैठकें आयोजित की जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि संसाधनों की खरीद आदि में समय लगने तक वैकल्पिक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। चिकित्सा शिक्षा विभाग ने सभी मेडिकल कॉलेजों के प्रधानाचार्यों को पत्र लिखकर निर्देश दिए हैं कि मेडिकल कॉलेजों से संबद्ध अस्पतालों में हीटवेव प्रबंधन के लिए आरएमआरएस में उपलब्ध बजट का युक्ति संगत उपयोग किया जाए। इसके लिए समस्त चिकित्सा महाविद्यालय से संबद्ध अस्पताल आरएमआरएस की बैठक तुरंत प्रभाव से आयोजित कर कूलर, एसी, डक्टिंग, वाटर कूलर, दवा आदि से संबंधित आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें।

भगवान में नहीं भक्त की भक्ति में चमत्कार होता है : मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज

दमोह. शाबाश इंडिया

भगवान में नहीं भक्त की भक्ति में चमत्कार होता है भगवान में अतिशय भक्त की भक्ति से आता है धर्म में ताकत धर्मात्मा की शक्ति से आती है मुनिचर्या मे चमत्कार मुनि से आता है व्रत में चमत्कार व्रत करने वाले से आता है। उपरोक्त विचार निर्यापक मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज ने दिगंबर जैन धर्मशाला में चल रहे श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर के तीसरे दिवस भक्तांबर की क्लास में अभिव्यक्त किहर। इस अवसर पर मुनि श्री के पाद प्रक्षालन के पश्चात शास्त्र भेंट किया गया। मुनि श्री को नवधा भक्ति के साथ आहार देने का सौभाग्य राजेश जैन हथना वालों को प्राप्त हुआ। मुनि श्री ने अपने मंगल प्रवचनों में आगे कहा कि जैन धर्म में तीर्थंकरों का जन्म पुण्य आत्माओं के उद्धार के लिए होता है पापियों के नाश के लिए नहीं जब दुनिया में धर्म की अभिवृद्धि होती है तो पुण्य शालियो के कल्याण के लिए प्रभु जन्म लेते हैं भक्तिवाद का मतलब भगवान से कुछ लेना नहीं है भक्त भगवान को सब कुछ अर्पण करना चाहता है भक्ति का अर्थ भगवान मेरे लिए नहीं वरन में उनके लिए बना हूं बड़े मेरी रक्षा करें यह भाव नहीं आना चाहिए यह विनाश की ओर ले जाता। उन्होंने दुर्योधन का उदाहरण दिया और बताया कि दुर्योधन का उदाहरण है उसका यह दुर्गुण था की वह अपने बड़ों से अपना हित चाहता था किंतु उसने स्वयं का नाश किया और बड़ों का भी नाश कर दिया किंतु हनुमान जी अपने आराध्य भगवान रामचंद्र जी के संकट दूर करने एक पैर पर खड़े रहे लक्ष्मण पर संकट आया तो पूरा पहाड़ उठा कर ले आए किंतु स्वयं को जब रावण ने बंदी बना लिया तो खुद अकेले ही निपटा दिया वे जीवन भर अपने आराध्य की रक्षा करते रहे किंतु कभी रामचंद्र जी से कुछ नहीं चाहा आज का मनुष्य बड़ों से बहुत कुछ अपेक्षा करता है मां-बाप से बहुत कुछ चाहता है मां बच्चों को क्या देती है वह रानी बनकर आती है और बच्चों के लिए मेहतरानी बन जाती है प्रभु क्या देते हैं उनकी भक्ति नाम स्मरण मात्र से जन्म जन्म के पाप कट जाते हैं संसारी प्राणियों के क्षण भर में संकट दूर हो जाते हैं जिस तरह है अंजन चोर ने क्षण मात्र में णमोकार मंत्र के स्मरण से अपने पापों को नष्ट कर लिया प्रभु की चरित्र चर्चा ही पापों को समूल नष्ट कर देती है जिस तरह सूर्य के उदय से सरोवर में कमल अपने आप खिल जाते हैं।

भय के कारण व्यक्ति आज निर्णय नही ले पाता है वीर सागर महाराजः इसके पूर्व प्रात काल 6:00 बजे जीने की कला क्लास में निर्यापक मुनि श्री वीर सागर जी महाराज ने कहा कि भय के कारण व्यक्ति आज निर्णय नहीं ले पाता वह जीवन भर सोचता रहता है भय की वजह से कदम आगे नहीं बढ़ा पाता और व्यक्ति की उन्नति अवरुद्ध हो जाती है इसका कारण अवचेतन मन में गलत धारणाएं बैठ जाती हैं जब हम किसी भी कार्य को ज्यादा इंपोर्टेंस देते हैं तो भय की उत्पत्ति होने लगती है, और धीरे-धीरे यह हमारी आदत बन जाती है सबसे ज्यादा भय लोगों को यह होता है कि लोग क्या कहेंगे दुनिया की ज्यादा नहीं सुनना चाहिए क्योंकि लोग ना करो तो भी कहते हैं और करोगे तो भी कहते हैं दुनिया ने बड़े-बड़े महापुरुषों को नहीं छोड़ा तो आप किस खेत की मूली हैं लोगों ने महावीर राम और सीता को भी लांछन लगाया तो वह सामान्य लोगों को कैसे छोड़ सकते हैं हर व्यक्ति से सलाह नहीं लेना चाहिए।

वृद्धाश्रम के वृद्धजनों ने किए खाटू श्याम जी के दर्शन

शाबाश इंडिया। हल्दी घाटी मार्ग, प्रताप नगर स्थित आशीर्वाद वृद्धा श्रम के बेसहारा, बेघर एवं विषम परिस्थितियों में जीवन यापन कर रहे वृद्धजनों को आशीर्वाद वृद्धाश्रम एवं श्री लाडली परिवार की ओर से डीलक्स बस में खाटृ श्याम जी के दर्शन करवाए गए, आश्रम के अध्यक्ष धीरज शर्मा ने बताया इन वृद्धजनों में इस धार्मिक यात्रा को लेकर अलग ही उत्साह था। बस रवाना होते ही भजन कीर्तन चालू कर दिए। एवं बस के खाटूशयाम जी पहुचंते ही मंदिर कमेटी ने सभी वृद्धजनों का माल्यार्पण कर स्वागत कर सामूहिक रूप से बाबा श्याम की आरती उतारी गई।

हथिनी गांव में भगवान आदिनाथ की प्रतिमा का मंत्रोच्चार के बीच हुआ महामस्तकाभिषेक

अजय जैन. शाबाश इंडिया

हथिनी, अम्बाह। सकल दिगंबर जैन समाज हथिनी गांव द्वारा जगत कल्याण की कामना हेतु जैन साध्वी गणिनी आर्यिका सौम्यनंदनी माता जी एवं गणिनी आर्यिका सुयोग्यनँदनी माताजी के मंगल आशीर्वाद से श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र हथिनी के जैन मंदिर में भगवान श्री आदिनाथ की विशाल प्रतिमा का सैकड़ो श्रद्धालुओं की मौजूदगी में मंत्रोच्चार की ध्वनि के बीच महामस्तकाभिषेक किया गया। इस आयोजन के दौरान मंदिर प्रांगण में मौजूद भीड़ भगवान आदिनाथ के जयकारे लगती रही सभी ने सामूहिक रूप से भगवान से ब्रह्मांड में शांति एवं सद्भाव की कामना की। इस अवसर पर सुबह मांगलिक क्रियाएं संपन्न होने के बाद मंत्रोच्चार प्रारंभ हुआ। जो आयोजन संपन्न होने तक अनवरत चलता रहा। इस दौरान अभिषेक के लिये श्रद्धालुओं की लंबी कतार मंदिर प्रांगण में लगी रही भगवान का महामस्तकाभिषेक करने के लिये सैकड़ो अनुयायी सुबह से ही तन मन की विशुद्धि के साथ पीले धोती दुपट्टे में अभिषेक में शामिल हुए। इस अवसर पर जगत कल्याण की कामना के लिए शांति धारा भी की गई आयोजन में शामिल

मुरैना के नीलेश जैन ने बताया कि हथिनी की पावन धरा पर स्थापित भगवान आदिनाथ का यह जिनालय युगों युगों तक सत्य अहिंसा और शांति का संदेश देता रहेगा। नीलेश जैन ने कहा कि जैन धर्म के अनुसार स्वयं को जीतना ही जग को जीतना है अष्ट कर्मों का नाश कर दोषों से पूरी तरह मुक्त होना ही मानव जीवन का लक्ष्य है और इसी बात की प्रेरणा हमे मंदिर में विराजमान भगवान आदिनाथ की यह भव्य मूर्ति देती है कि संसारी दुखों से मुक्त होने के लिए हमें मोक्ष मार्ग अपनाना चाहिए।

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज के प्रवचन से...

जिन्दगी अगर समझ ना आई, तो मेले में अकेला..
अगर जिन्दगी समझ आ गई, तो अकेले में मेला..!

जिन्होंने जो भी पाया, वो वन में जाकर ही पाया। कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है -- कि जो एक को जानता है, वो सब को जान लेता है। और जो सबको जानता है, वो एक को जानने से वंचित रह जाता है। इसलिए भारत का इतिहास है - जिस किसी के भी मन में स्वयं को जानने की और पाने की लालसा जगी है, वह वन की तरफ गया है। जीवन का असली आनंद और सत्य, वन में जाकर साधना से मिलता है। राम - कृष्ण - बुद्ध - महावीर -- सभी तो वन की तरफ गए थे। क्योंकि यह महापुरुष जानते थे कि वन, बनने की प्रयोगशाला है। जो भी वन गया, वह बन गया -- राम वन गए तो बन गए, क्या - ? मर्यादा पुरुषोत्तम।

महावीर वन गए तो बन गए, क्या- ? तीर्थंकर।

बुद्ध वन गए तो बन गए, क्या- ? महात्मा।

कृष्ण वन गए तो बन गए, क्या- ? योगीराज।

स्वयं की खोज में जो भी वन गया, वह भगवान बन गया है। और जो भवन में अटक गया, वह मिट गया। रावण सरीखे के लोग भवन के मोह से ऊपर ना उठ पाए, परिणाम यह निकला सबकुछ होकर भी वह अनाथ होकर के मरा...!!! -नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद।

वेद ज्ञान

जीवन में उद्देश्य का महत्व

जीवन की सार्थकता कर्तव्य कर्म का समुचित रूप से निर्वाह करने में है। जो कर्तव्य दायित्व हमें मिला है उसे सही और श्रेष्ठ रूप में कर लेने में बुद्धिमत्ता है। वैसे तो जीवन सभी को मिलता है, परंतु जो जीवन को महान कार्य में समर्पित कर देता है उसी का जीवन सफल है। जन्म और मृत्यु तो प्राकृतिक नियम है। यह तो होना ही है, परंतु कर्तव्य का समुचित नियोजन धर्म है। कर्तव्य के इस रहस्य को जीवन के मर्मज्ञ बखूबी जानते-समझते हैं और वे इसके लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने में पल भर भी देरी नहीं करते। वे सर्वदा अपने कर्तव्य कर्म को सर्वप्रमुख वरीयता प्रदान करते हैं। कर्म से ही जीवन की परिभाषा बनती है। सामान्य व्यक्ति इस रहस्य को नहीं जान पाने के कारण इतने बहुमूल्य जीवन को भोग के रूप में व्यर्थ ही गवां बैठते हैं। वास्तव में कर्तव्य उससे निभता है जिसके मन में साहस और हृदय में प्रीति है। साहसी ही साहस कर सकता है कि जो कार्य उसे दिया गया है उसे वह कर सके। कर्तव्य को निभा पाना आसान नहीं है। वीर और पराक्रमी अपने जीवन की परवाह किए बगैर अपने लक्ष्य को पूरा करते हैं। लक्ष्य के लिए वही मर-मिट सकता है जिसके भाव सघन होते हैं। ये दोनों बातें अर्थात साहस व शौर्य के साथ हृदय में झलकती भावना भी हो तो वही कर्तव्य का समुचित निर्वहन होता है। एक की भी कमी हो जाए तो समग्रता नहीं आ पाती है। जीवन सत्कर्मों के प्रभाव से विकसित और समुन्नत होता है और स्वार्थ-अहंकार के वशीभूत होकर पतन-पराभव में चला जाता है। जीवन उसका सफल है जो औरों के काम आ सके, दूसरों की सेवा कर सके और प्रेरणा का प्रकाश बन सके। ऐसे जीवन का छोटा-सा खंड (उम्र) भी शतायु पार करने वाले से उत्कृष्ट और महान होता है। वस्तुतः संसार में प्रत्येक मनुष्य का अपना कर्तव्य होता है और उसको शानदार ढंग से निभाने के लिए भगवान कुछ अवसर भी देता है। जो इस अवसर का लाभ उठाकर अपने कार्य में तत्पर हो जाता है उसी का जीवन सार्थक और प्रसन्न होता है। जीवन का हर पल मूल्यवान है। कौन जानता है कि जीवन का कौन-सा पल-क्षण आपको कहां से कहां पहुंचा दे।

संपादकीय

लाभांश का उपयोग राजकोष के लिए हो

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने ऐलान किया कि उसके बोर्ड ने भारत सरकार को डिविडेंड के तौर पर दी जाने वाली राशि तय कर ली है। इसके बाद आया 2.11 लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा चौंकाने वाला है। केंद्रीय वित्त मंत्री द्वारा इस साल पेश वित्त वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट में रिजर्व बैंक से डिविडेंड के रूप में सिर्फ 1.02 लाख करोड़ रुपये मिलने का अनुमान लगाया गया था। इस तरह सरकार के लिए मौजूदा वित्त वर्ष में यह 1.09 लाख करोड़ रुपये के अप्रत्याशित लाभ जैसा है। यह इसके बावजूद है कि रिजर्व बैंक के बोर्ड ने आकस्मिक जोखिम बफर को बढ़ाकर बहीखाते के 6.5 फीसदी तक करने का फैसला किया है जो कि कुछ साल पहले घोषित दिशानिर्देशों के तहत उच्चतम स्तर है। ऐसा उच्च धन हस्तांतरण सतह पर तो सुरक्षित लगता है। फिलहाल भारत की व्यापक आर्थिक स्थिरता को लेकर कोई वास्तविक चिंता भी नहीं है। अतिरिक्त लाभांश से निश्चित रूप से अगली सरकार के लिए काम थोड़ा आसान हो जाएगा। जब जुलाई महीने में पूर्ण बजट पेश होगा तो यह उम्मीद है कि वित्त मंत्रालय इस अवसर का इस्तेमाल अपनी राजकोषीय मजबूती की प्रक्रिया को तेज करने के लिए करेगा। सरकार के वित्त व्यवस्था पर अब भी कोरोना महामारी के कुछ प्रभाव दिख जाते हैं। महामारी आने से पहले राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 4.6 फीसदी था जो किसी भी लिहाज से ''सामान्य समय'' के लिए काफी ज्यादा है। महामारी के वर्ष में जीडीपी में कमी और कुछ असाधारण कदम उठाने की मजबूरी की वजह से यह बढ़कर जीडीपी के 9 फीसदी से ज्यादा हो गया। हालांकि वित्त वर्ष 2024-25 के बजट अनुमान में यह अब भी 5 फीसदी से ज्यादा है। इसलिए समझदारी इसी में है कि रिजर्व बैंक के इस धन हस्तांतरण का, जो कि जीडीपी के 0.3 फीसदी तक हो सकता है, इस्तेमाल राजकोषीय घाटे को 5 फीसदी से नीचे लाने के लिए किया जाए। मौजूदा वित्त वर्ष में सरकार की सकल बाजार उधारी 14.13 लाख करोड़ रुपये तय की गई है और शुद्ध बाजार उधारी 11.75 लाख करोड़ रुपये होगी। अगर इस आंकड़े में कुछ कमी होती है इससे कर्ज प्रबंधन में मदद मिलेगी और सरकारी प्रतिभूतियों की यील्ड में गिरावट आएगी जो कि स्वागत योग्य बात होगी। हालांकि, राजकोषीय टिकाऊपन के बड़े सवाल का समाधान होना चाहिए। सरकार लगातार केंद्रीय बैंक से हस्तांतरण या सार्वजनिक उद्यमों से मिलने वाले लाभांश पर निर्भर नहीं रह सकती। समुचित राजकोषीय प्रबंधन के लिए जरूरत इस बात की है कि सरकार देश में कर-जीडीपी अनुपात को बढ़ाए। यह वस्तु एवं सेवा कर को सुव्यवस्थित करने से हो सकता है तो जीएसटी परिषद में जीएसटी दरों और स्लैब को वाजिब बनाने के लिए अगली सरकार को तत्काल कदम बढ़ाने होंगे। अपरिपक्व तरीके से दरों में कटौती और कई स्लैब होने के कारण जीएसटी प्रणाली का प्रदर्शन कमजोर रहा है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

चुनाव आयोग से अपेक्षा

चुनाव आयोग से अपेक्षाएं बढ़ी हैं, तो शिकायतों का भी अंबार लगने लगा है। इसी कड़ी में आयोग के ताजा हलफनामे को देखा जा सकता है। चुनाव आयोग ने सर्वोच्च न्यायालय को बताया है कि आयोग के लिए फॉर्म 17सी के आधार पर मतदान संबंधी आंकड़ों के रिकॉर्ड को सार्वजनिक करने का कोई कानूनी आदेश नहीं है। आयोग मानता है कि इन आंकड़ों का खुलासा अतिसंवेदनशील हो सकता है। चुनाव आयोग ने यह हलफनामा एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स, यानी एडीआर और कॉमन कॉज द्वारा दायर एक याचिका के जवाब में दायर किया है। याचिका में मौजूदा लोकसभा चुनावों में मतदान डाटा के तत्काल प्रकाशन की मांग की गई है और चुनाव आयोग शायद इसके लिए तैयार नहीं है। ध्यान रहे, यह देश अपनी तमाम सांविधानिक संस्थाओं से ज्यादा से ज्यादा पारदर्शिता की अपेक्षा करता है। सहजता से अगर देखें, तो कोई संस्था जब अपने आंकड़ों की गोपनीयता के प्रति ज्यादा आग्रह दिखाती है, तब बहुत से संवेदनशील लोग चिंतित हो जाते हैं। पारदर्शिता से ही विश्वसनीयता का विकास होता है और आयोग को यथासंभव जल्दी के साथ मतदान संबंधी आंकड़ों को सार्वजनिक करना चाहिए। हां, तकनीकी रूप से चुनाव आयोग सही है। आंकड़ों को सबके लिए सार्वजनिक करना उसका कानूनी कर्तव्य नहीं है। बाध्यता नहीं है कि आयोग फॉर्म 17सी के तहत दर्ज प्रामाणिक आंकड़ों को सबसे साझा करे। दरअसल, चुनाव आयोग आंकड़ों की खान है और वह अपने तमाम आंकड़ों को उजागर करता रहा है। उसे इस मोरचे पर किसी भी तरह की हिचक से बचना चाहिए। संविधान रचने वालों ने सांविधानिक संस्थाओं से यही उम्मीद की थी कि जैसे-जैसे देश के लोगों को जरूरत होगी, ये संस्थाएं अपने को समय के अनुरूप बदलेंगी। हर बात के लिए लिखित कानून का इंतजार या कानून के अभाव का हवाला अनुचित है। अगर आयोग ने समय के साथ अपनी किसी नीति में परिवर्तन किया है, तो उसके बारे में भी लोगों को पता होना चाहिए। मात्र तकनीकी आधार पर सूचनाओं के प्रसार को नहीं रोका जा सकता। यह कहना नैतिक रूप से ठीक नहीं है कि उम्मीदवार या उसके पोलिंग एजेंट के अलावा किसी अन्य व्यक्ति को फॉर्म 17सी की सूचनाएं प्रदान करने का कोई कानूनी आदेश नहीं है। इस समग्र मामले को पूरी गंभीरता और साफगोई से देखना चाहिए। वैसे तो चुनाव आयोग मतदान के आंकडे. जारी कर रहा है, पर जारी करने में देरी हो रही है और इसी देरी से संदेहों को बल मिल रहा है। अनेक लोग सवाल उठा रहे हैं। एक विश्लेषण के अनुसार, 2024 के लोकसभा चुनावों के पहले चार चरण के लिए हुए चुनाव में मतदान आंकड़ों में 1.07 करोड़ वोटों का अंतर लगता है। आशंका है कि प्रति सीट औसतन 28,000 वोटों की वृद्धि हो रही है। ये वोट किधर जा रहे हैं, इससे किसे लाभ होगा, इसकी चिंता अगर कुछ चुनाव विशेषज्ञों को हो रही है, तो आश्चर्य नहीं। चुनाव आयोग को अपने ठोस और अकाट्य जवाब के साथ सामने आना चाहिए। तकनीकी बहानों के पीछे ज्यादा समय तक छिपा नहीं जा सकता, क्योंकि अंततः आज के समय में आंकड़ों को छिपाना असंभव है। छिपाए गए आंकड़े देर-सबेर सामने आएंगे, तब इससे आयोग की ही प्रतिष्ठा प्रभावित होगी।

खोटी आदत को व्यसन कहते हैं: स्वस्तिभूषण माताजी

केशवरायपाटन. शाबाश इंडिया

परम पूजनीय भारत गौरव गणिनी आर्यिका 105 स्वस्तिभूषण माताजी अतिशय क्षेत्र पर विराजमान है और यहां महती धर्म प्रभावना हो रही है। शुक्रवार की बेला में पूज्य माताजी ने अनर्थ दंडवत के विषय में समझाया एवं कहा कि खोटी आदत को व्यसन कहते हैं। पूज्य माताजी ने विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए कहा कि ''प्रयोजन रहित सोचना प्रयोजन रहित कार्य करना ही अनर्थदंड है।'' उन्होंने आईपीएल मैच का उदाहरण देते हुए समझाया कि क्रिकेट मैच मैदान में चल रहा है और हम टीवी पर उनकी हार जीत को देखकर खुशी और दुःख मना रहे हैं! इसको कहते हैं व्यर्थ में पाप कमाना! पूज्य माताजी ने कटाक्ष करते हुए कहा कि अभी आई पी एल मैच चल रहे हैं रोज उसमें 3 घंटे मैच देखने में लगाते हो उससे क्या लाभ हुआ! व्यर्थ के पाप बंध कर रहें हैं! अगर इतने दिनों से रोज ढाई-तीन घंटा दुकान चलाने में मन लगाया होता तो घर के लिए थोड़े पैसे अधिक जुड़ जाते! पढ़ाई में ढाई-तीन घंटा लगाया होता तो आज अच्छा परिणाम आया होता! अगर ढाई-तीन घंटा स्वाध्याय किया होता तो आज हमारा ज्ञान कितना बढ़ गया होता! धीर धीरे यह मैच आदि की आदत लग जाती है! खोटी आदत को व्यसन कहते हैं! जिस कार्य से कोई लाभ कोई प्रयोजन ना हो उसे कहते हैं अनर्थदंड! उन्होंने ध्यान के विषय में भी प्रकाश डाला और कहा कि मन वचन काय की एकाग्रता को ध्यान कहते हैं! जिस चीज को ध्यान से करोगे उसके अनुसार कर्म बंध होगा !वोट देना अच्छी सरकार का चुनाव करना हमारा कर्तव्य है हमें वोट डालना चाहिए! लेकिन दिन भर उसी का चिंतन करते रहना ये जीतेगा वो हारेगा ये अनर्थदंड है! पूज्य माता जी के प्रवचन से पूर्व विनोद भैया ने माता जी के विषय में प्रकाश डाला और बताया कि जैसे वृक्ष का अस्तित्व जड़ से होता है! वृक्ष जब बड़ा हो जाता है तो उसकी सामर्थ बढ़ जाती है !कितनी आंधी तूफान आए खड़ा रहता है! वैसे ही पूज्य माता का जीवन एक दृढ़ संकल्प से जुड़ा है कि मुझे आत्म कल्याण एवं पर को सन्मार्ग पर लगाना है! माता जी की दृढ़ शक्ति इतनी प्रबल है कि आंधी तूफान के जैसी परेशानियां आने पर भी विचलित नहीं होती! चेतन जैन केशव राय पाटन से प्राप्त जानकारी के साथ अभिषेक जैन लुहाड़िया रामगंजमंडी की रिपोर्ट

चंद्रनाथ जिनालय का प्रथम स्थापना दिवस एवं मुनि श्री आदित्यसागर जी का अवतरण दिवस मनाया

राजेश जैन दद्दू. शाबाश इंडिया

इंदौर। अंबिकापुरी स्थित भगवान श्री चंद्रनाथ स्वामी के अतिशयकारी जिनालय का प्रथम स्थापना दिवस भक्तिभाव से सम्पन्न हुआ । साथ ही जिनालय के प्रणेता श्रुत संवेगी मुनि श्री 108 आदित्यसागर जी महाराज का 38 वा अवतरण दिवस भी गुरु भक्तों ने उमंग और उत्साह के साथ मनाया। एयरपोर्ट रोड स्थित अम्बिकापुरी कालोनी के प्रथम चरण के जिनालय के प्रथम स्थापना दिवस पर श्री जी के अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ श्री शांतिनाथ विधान भी किया गया। विधि विधान के समस्त कार्य पंडित गजानंद गज्जू ने संपन्न कराए। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हुए एवं मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज के 38 वें अवतरण दिवस पर विशेष गुणानुवाद सभा आयोजित हुई जिसमें डॉ अभिषेक सेठी, राजेश कानूगो, विजेंद्र सोगानी राजेश जैन दद्दू आदि ने मुनि श्री का गुणानुवाद करते हुए गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला एवं संस्मरण सुनाए।

गरीब कन्या के विवाह में निभाई महत्ती भूमिका

विभिन्न समाजसेवियों ने दिया आवश्यक घरेलू सामान

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्याम साईं संस्थान ने अनूठी पहल करते हुए असहाय एवं निर्धन कन्या को परिणय सूत्र में बांधे जाने का पुण्य कार्य किया गया। संस्थान द्वारा कठपुतली नगर फुटपाथ पर रहने वाले भाट समाज की गरीब परिवार की कन्या का विवाह कराकर अपने कर्तव्य की पालना की। इस विवाह समारोह में कठपुतली नगर विकास समिति के अध्यक्ष एवं राजस्थान कच्ची बस्ती महासंघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. ओपी टांक के सानिध्य में सभी रस्मों-रिवाज का निर्वहन किया गया। वहीं विभिन्न समाजसेवियों ने अपनी सामर्थ्य अनुसार आवश्यक घरेलू सामान वधु को दिए गए। समारोह में सखी गुलाबी नगरी की अध्यक्ष सारिका जैन, सचिव स्वाति जैन एवं इनकी टीम द्वारा वाशिंग मशीन, 50 साड़ियां एवं घरेलू सामान दिया गया। वहीं राजस्थान हाईकोर्ट के पूर्व महाधिवक्ता डॉ. अभिनव शर्मा एडवोकेट एवं श्रीमती पूजा शर्मा की ओर से एलईडी भेंट की गई। ब्लड फाउंडेशन संस्था अध्यक्ष डॉ. अपर्णा शर्मा एवं समस्त पदाधिकारियों द्वारा आवश्यक घरेलू सामान दिया गया। नित्या फाउंडेशन अध्यक्ष वर्षा जैन द्वारा स्टील की अलमारी भेंट की गई। भाजपा जयपुर शहर के उपाध्यक्ष अनिल शर्मा की ओर से भोजन की व्यवस्था की गई। इसी प्रकार अक्षित जैन की ओर से गैस का चुल्हा, अरुण जैन की ओर से कूलर, सत्य नारायण साहू की ओर से पंखा, शिव प्रताप गुर्जर की ओर से डबल बैड, श्रीमती रमा केडिया एवं श्रीमती जयश्री सिद्धा ग्रुप द्वारा मिठाई की व्यवस्था की गई। **इन्होंने संभाली व्यवस्थाएं:** कठपुतली नगर विकास समिति के अध्यक्ष डॉ. ओपी टांक, उपाध्यक्ष अशोक शर्मा, महामंत्री गजानंद खींची, वाल्मिकी समाज सरपंच रवि हटवाल, अरुण गोगलिया एवं समस्त सदस्यों द्वारा विवाह स्थल पर स पूर्ण व्यवस्था एवं देखभाल की गई। वहीं डॉ. ओपी टांक ने सभी सहयोगकताओं एवं आगंतुकों का आभार जताया।

अपने दुःख से नहीं दूसरे के सुख को देखकर दुःखी है आज का इंसान : आर्यिका सृष्टिभूषण माता जी

माता जी बोलीं बाहर की संपत्ति से नहीं अंदर की संपत्ति से अमीर बनो

ललितपुर. शाबाश इंडिया

अटा जैन मंदिर में विराजमान विद्याभूषण आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज की परम शिष्या आर्यिका सृष्टिभूषण माता जी व आर्यिका विश्वयशमती माता जी द्वारा धर्म की महती प्रभावना की जा रही है। लाभ लेने के लिए श्रद्धालु उमड़ रहे हैं। शुक्रवार को धर्म सभा का शुभारंभ आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन श्रेष्ठि राजेश पंचौलिया इंदौर, कैरियर काउंसलर रितेश गाजियाबाद, मीडिया प्रभारी अक्षय अलया, डॉ सुनील संचय, सचिन शास्त्री आदि द्वारा किया गया। संचालन मंदिर प्रबंधक मनोज बबीना ने किया। आभार जैन पंचायत के अध्यक्ष डॉ अक्षय टडैया ने किया। इस अवसर पर धर्म सभा को संबोधित करते हुए आर्यिका सृष्टि भूषण माता जी ने कहा कि आज व्यक्ति अपने दुःख से नहीं दूसरे के सुख को देखकर दुःखी है। आज के व्यक्ति के जीवन से मानो जैसे खुशी गायब सी हो गई है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि उन्हें बिना स्वार्थ का जीवन जीने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिससे जीवन में अपार खुशियां आ सकें। उन्होंने कहा कि अगर हम किसी को सुख नहीं दे सकते तो उसे दुख देने का भी अधिकार नहीं है। किसी इंसान को अपने दुख के कारण दुख हो तो बात समझ में आती है, अगर उसे दूसरों के सुख को देखकर दुख होता हो तो एक बात मन में आती है की वह इंसान कहीं ईर्ष्या और द्वेष की भावनाओं का शिकार तो नहीं है। दूसरे हमसे ज्यादा सुखी हैं, दूसरों की बढ़ती तरक्की हमें दिखाई दे रही है; अच्छी बात है। मगर हमें तकलीफ क्यों हो रही है? अगर हमें दूसरों की खुशहाली को देखकर ज्यादा तकलीफ हो रही है तो इसका अर्थ कुछ यह होता है की हमारी सोच में कहीं कुछ गड़बड़ी है और यहीं से शुरूआत होती है अपने आप में सुधार करने की। आज का व्यक्ति दूसरे को आगे बढ़ते नहीं देखना चाहता है। उन्होंने कहा कि नजर को बदलिए नजरिया बदल जाएंगे। माता जी ने अपने प्रवचन में अनेक सीख दीं। उन्होंने कहा कि चित्त को सुंदर बनाएं चित्र को नहीं। आज लोगों का चित्त मधुमक्खी के छत्ते की तरह हो गया है। बाहर की संपत्ति से नहीं अंदर की संपत्ति से अमीर बनो। बाहर की संपत्ति का नाश हो जाता है आत्म संपत्ति कभी नष्ट नहीं होती। आज युवा पीढ़ी दिशाविहीन हो रही है। बच्चों को इतना लायक न बनाए की तुम्हे ही नालायक समझने लगें। संस्कार मात्र शब्दों से न हो आचरण में झलकनी चाहिए। हमेशा गणी ग्रहण का भाव रखो। अंदर के राग- द्वेष जितने घटेंगे

उतने अच्छे हो जायेगा। उन्होंने सास बहू के बढ़ते झगड़ों पर कहा कि माता- पिता बेटी को ससुराल विदा करते समय सीख दें ससुराल में मंगल कलश बनकर रहना न कि कलह बनकर। व्यक्ति को मंदिर, धर्म के नाम पर कभी नहीं लड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि धर्म को कभी नहीं छोड़ना, सीता का उदाहरण देते हुए कहा कि सीता को लोकोपवाद के कारण जब जंगल में छोड़ दिया था तब सीता ने संदेश दिया था कि लोकोपवाद से मुझे छोड़ दिया पर धर्म को नहीं छोड़ना। माता जी ने कबीर दास जी का दोहा बोलते कहा कि निंदक नियरे राखिए, ऑगन कुटी छवाय, बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय। कहा कि निंदक हमेशा पास रखना चाहिए। गोस्वामी तुलसी दास जी की चौपाई बोलते हुए माता जी ने कहा कि धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपद काल परिखिअहिं चारी। धैर्य, धर्म, मित्र और पत्नी की परख विपत्ति के समय ही होती है। उन्होंने कहा कि बाहर की संपत्ति से नहीं अंदर की संपत्ति से अमीर बनो। इस मौके पर सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

महावीर प्रवाह के फंड रेजिंग विशेषांक का लोकार्पण, ऑनलाइन हुआ कार्यक्रम

जयपुर. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल अपेक्स के त्रैमासिक मुखपत्र महावीर प्रवाह का लोकार्पण ऑनलाइन माध्यम से अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष सी ए अनिल जैन, कोषाध्यक्ष सुधीर जैन, संपादिका रश्मि सारस्वत एवं उपाध्यक्ष गौतम राठौड़ ने किया। एम आई गवर्निंग काउंसिल सदस्य अजीत कोठिया ने बताया की आयोजन मे वागड़ जोन डूंगरपुर बांसवाड़ा के जोन चेयरमैन पृथ्वीराज जैन, सुरेश गांधी, विनोद दोशी, अजीत कोठिया, कुसुम कोठिया, पुष्पा जैन, अलका दुधेरिया, अनील जैन दरीबा, सुनील गांग, उत्सव जैन सहित 62सदस्यों ने हिस्सा लिया। अंक का परिचय रश्मि सारस्वत ने दिया। वागड़ जोन की ओर से सभी का आभार गवर्निंग काउंसिल सदस्य अजीत कोठिया ने व्यक्त किया।

पशु पक्षियों हेतु गर्मी के इस मौसम में हरा चारा और पीने का पानी की व्यवस्था शुरू

सुजानगढ़. शाबाश इंडिया। स्थानीय सुजलांचाल पशु पक्षियों हेतु गर्मी के इस मौसम में हरा चारा,और पीने का पानी की व्यवस्था शुरूविकास मंच समिति के तत्वाधान में पशु पक्षियों हेतु गर्मी के इस मौसम में हरा चारा,और पीने का पानी की व्यवस्था शुरू की गई। समिति उपाध्यक्ष महावीर प्रसाद पाटनी ने कार्यक्रम को रेखांकित करते हुए बताया कि समाजसेवी निहालचंद बगड़ा की प्रेरणा से प्रवासी निवासी भामाशाह के सहयोग से चिलचिलाती गर्मी के इस मौसम में मूक पशु पक्षियों के लिए पानी के टैंकर द्वारा शहरी व आस पास के क्षेत्र में पीने के पानी व खाने के लिए हरा चारा डाला जाएगा। साथ ही समिति द्वारा पिछले एक महीने से राजकीय बगड़िया चिकित्सालय परिसर व रेलवे स्टेशन पर भी आमजन हेतु पानी की व्यवस्था कार्यक्रम अनवरत जारी है। इस व्यवस्था का शुभारंभ महेश कुमार बगड़ा, ईटानगर प्रवासी द्वारा किया गया। इस अभियान में समिति की अध्यक्ष उषा देवी बगड़ा,सचिव विनीत कुमार बगड़ा सहित रविप्रकाश प्रजापत का उल्लेखनीय योगदान रहा।

क्यों संदिग्ध है अकादमी पुरस्कारों की वार्षिक गतिविधियां?

(आखिर क्यों सही से काम नहीं कर पा रही साहित्य अकादमियां?)

डॉ. सत्यवान सौरभ

साहित्य किसी भी देश और समाज का दर्पण होता है। इस दर्पण को साफ-सुथरा रखने का काम करती है वहां की साहित्य अकादमियां। लेकिन सोचिये क्या होगा? जब देश या राज्य का आईना सही से काम न कर रहा हो तो वहां की सरकार पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है। जी हाँ, ऐसा ही कुछ हो रहा है देश के राज्यों की साहित्य अकादमियों में। किसी भी राज्य की साहित्य अकादमी के अध्यक्ष है होते हैं राज्य के मुख्यमंत्री। मुख्यमंत्री जिस संस्था के अध्यक्ष हो वही संस्था अगर सही से काम न करें तो बाकी संस्थाओं की स्थिति का अंदाजा आप लगा सकते है। आज हम देखते हैं कि अधिकांश साहित्य और कला अकादमियों के मंच पर पुरस्कृत होने वाले लोगों में अधिकतर को कोई जानता भी नहीं है। यह सच है कि आज जितनी राजनीति में राजनीति है उससे अधिक राजनीति साहित्य और कलाओं में है। प्रेमचंद ने साहित्य को राजनीति के आगे जलने वाली मशाल कहा था। लेकिन देश भर में आज साहित्य राजनेताओं के पीछे चल रहा है। पिछले दशकों में हुए साहित्य, संस्कृति और भाषा के पतन का असर आगामी पीढ़ियों तक जाएगा। लेकिन किसे फिक्र है। राज्य अकादमी पुरस्कारों की वार्षिक गतिविधियां संदिग्ध है। जो कार्य एक वर्ष में पूर्ण होने चाहिए उनको करने में सालों लग रहें है। पुरस्कारों के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया स्पष्ट और समयानुसार नहीं है। उदाहरण के लिए हरियाणा साहित्य अकादमी के वार्षिक परिणामों की घोषणा का साल खत्म होने को है, मगर अभी तक नहीं हुई है। न ही आगामी साल का प्रपत्र जारी किया गया है। एक अकादमी के भीतर क्या- क्या खेल चलते है? पारदर्शिता के अभाव में किसी को पता नहीं चलता। वैसे कोई भी पुरस्कार या सम्मान उत्कृष्टता का पैमाना नहीं हो सकता। हिंदी भाषा में निराला, मुक्तिबोध, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, राजेंद्र यादव, असगर वजाहत जैसे महत्वपूर्ण कवियों-लेखकों को भी साहित्य अकादमी पुरस्कार नहीं दिया गया और बहुत से ऐसे लेखकों को पुरस्कृत किया गया, जिन्हें कभी का भुलाया जा चुका है। इस बारे में विचार करना चाहिए और पुरस्कार की प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी बनाना चाहिए। आज जिस प्रकार से सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कुछ योग्य एवं अयोग्य साहित्यकार, कवि, लेखक, कलाकार साम-दाम-दण्ड-भेद सब अपना रहे हैं और अपने प्रयासों में प्रायः सफल भी हो रहे हैं, उससे सम्मानों और पुरस्कारों के चयन की प्रक्रिया की विश्वसनीयता और पारदर्शिता पर प्रश्नचिन्ह लगना स्वाभाविक है। पुरस्कारों की दौड़ में साहित्य का भला नहीं हो सकता।

पुरस्कारों की दौड़ में खोकर,
भूल बैठे हैं सच्चा सृजन ।
लिख के वरिष्ठ रचनाकार,
करते है वो झूठा अर्जन ।।
मस्तक तिलक लग जाए,
और चाहे गले मे हार ।
बड़े बने ये साहित्यकार।।

आज साहित्य और कला जगत में बहुत सी संस्थाएं काम कर रही है। जब मैं इन संस्थाओं की कार्यशेळी देखता हूँ या इनके समारोहों से जुडी कोई रिपोर्ट पढ़ता हूँ तो सामने आता है एक ही सच। और वो सच ये है कि किसी क्षेत्र विशेष या एक विचाधारा वाली संस्थाएं आपस में अग्रीमेंट करके आगे बढ़ रही है। ये एग्रीमेंट यूं होता है कि आप हमें सम्मानित करेंगे और हम आपको। और ये सिलसिला लगातार चल रहा है अखबारों और सोशल मीडिया पर सुर्खियां बटोरता है। खासकर ये ऐसी खबर शेयर भी खुद ही आपस में करते है। आम पाठक को इससे कोई ज्यादा लेना देना नहीं होता। अब बात करते है सरकारी संस्थाओं और पुरस्कारों की। इनकी सच्चाई किसी से छुपी नहीं। जिसकी जितनी मजबूत लाठी, उतना बड़ा तमगा। सिफारिशों के चौराहों से गुजरते ये पुरस्कार पता नहीं, किस को मिल जाये। किसी आवेदक को पता नहीं होता। इनकी बन्दर बाँट तो पहले से ही जगजाहिर है। ऐसे पुरस्कारों की विश्वसनीयता को लेकर देश भर में गंभीर आरोप लग रहे हैं। सच्चा रचनाकार इनके चक्कर में कम ही पड़ रहा है।

अब चला हाशिये पे गया,
सच्चा कर्मठ रचनाकार ।
राजनीति के रंग जमाते,
साहित्य के ये ठेकेदार ।।
बेचे कौड़ी में कलम,
हो कैसे साहित्यिक उद्धार ।
बड़े बने ये साहित्यकार।।

आज संस्थाएं एक दूजे की हो गयी है। एक दूसरे को सम्मानित करने और शॉल ओढ़ाने में लगी है। सरकारी पुरस्कार बन्दर बाँट कहे या लाठी का दम। जितनी जान-पहचान उतना बड़ा तमगा। ये प्रमाण पुरस्कार विजेताओं की प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हैं। आज देशभर की साहित्य अकादमियां पद और पुरस्कारों की बंदर बांट करने में लगी है।अधिकांश अकादमियों के कामकाज को देखकर तो यही लगता है। जब तक विशेषज्ञता के क्षेत्र में राजनीतिक नियुक्तियां होती रहेगी तब तक ऐसी दुर्घटनाएं होती रहेगी। सिविल सेवा कमिशन और प्रदेशों की अकादमी में सदस्यों और अध्यक्षों की राजनीतिक नियुक्तियों ने इन संस्थाओं की विशेषज्ञता पर प्रश्न चिन्ह लगाए हैं। पिछले दशकों में पुरस्कारों की बंदर बांट कथित साहित्यकारों, कलाकारों और अपने लोगों को प्रस्तुत करने के लिए विशेष साहित्यकार, पुरोधा कलाकार, साहित्य ऋषि जैसी कई श्रेणियां बनी है। जिसके तहत विभिन्न अकादमियां एक दूसरे के अध्यक्षों को पुरस्कृत कर रही है और निर्णायकों को भी सम्मान दिलवा रही है। इन पुरस्कारों में पारदर्शिता का अभाव है। बिना साधना के कैसा साहित्य?

देव-पूजन के संग जरूरी,
मन की निश्छल आराधना ।।
बिना दर्द का स्वाद चखे,
न होती पल्लवित साधना ।।
बिना साधना नहीं साहित्य,
झूठा है वो रचनाकार ।
बड़े बने ये साहित्यकार।।

अब समय आ गया है कि देश की सभी राज्य अकादमियों को केंद्रीय साहित्य अकादमी की तरह सचमुच स्वायत बनाया जाए और इनका काम पूरी तरह से साहित्यकारों, कलाकारों को सौंपा जाए। किसी भी अकादमी के वार्षिक कार्यों की प्रगति समयानुसार और पूरी तरह पारदर्शी बनाने पर जोर देना होगा ताकि सच्चे साहित्यकारों का विश्वास उन पर बना रहे। उदाहरण के लिए हरियाणा हिंदी साहित्य अकादमी के वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा जिसका राज्य के साहित्यकार बेसब्री से इंतजार करते है, के वर्ष 2022 के परिणाम अभी 2024 में भी जारी नहीं हुए है। इससे आप अंदाजा लगा सकते है कि समाज को आईना दिखाने वाले किस कद्र सोये पड़े है। हरियाणा हिंदी साहित्य अकादमी हर वर्ष 12 से अधिक साहित्यिक पुरस्कार जिसमें एक लाख से सात लाख तक की पुरस्कार राशि दी जाती है और श्रेष्ठ कृति के अंतर्गत पद्रह सौलह विधाओं में 31 -31 हजार रुपये की राशि सम्मान स्वरुप प्रदान करती है। इन पुरस्कारों के अलावा वर्ष भर की श्रेष्ठ पांडुलिपियों को चयनित कर उन्हें प्रकाशन अनुदान प्रदान करती है। लेकिन हरियाणा में सरकारी भर्तियों की तरह ये भी बड़ा दुखद है कि जो परिणाम अगस्त में घोषित होने थे; वो अगले साल कि जनवरी बीत जाने के बाद भी नहीं घोषित किये गए न ही साल 2023 का प्रपत्र जारी किया गया जिसमें आने वाले साल के लिए साहित्यकारों को आवेदन करना होता है; आखिर क्यों ? उम्मीद है कि राज्य सरकारें अकादमियों के वर्तमान विवादास्पद कार्यों की जांच कराएगी और अकादमी में योग्य और प्रतिभाशाली लेखक, कलाकारों को नियुक्त करेगी। ताकि देश भर पर भाषा, साहित्य और संस्कृति नित नए आयाम गढ़ती रहे।

श्रमण संस्कार शिविरों के माध्यम से संस्कारों का हो रहा बीजारोपण : संजय बडजात्या

आचार्य शशांक सागर जी का विद्यार्थियों को मिल रहा आशीर्वाद। जनकपुरी में चल रहे संस्कार शिविर की व्यवस्थाये सराहनीय

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी ज्योति नगर जैन मंदिर जयपुर में श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के अंतर्गत संचालित संत श्री सुधासागर आवासीय कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित हो रहे श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर का अवलोकन धर्म जागृति संस्थान के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री संजय जैन बड़जात्या कॉमा ने कर व्यवस्थाओं की सराहना करते हुए कहा कि श्रमण संस्कार शिविरों के माध्यम से संस्कारो का बीजारोपण हो रहा है जिसकी वर्तमान में नितांत आवश्यकता है। जनकपुरी जैन समाज अति सक्रियता के साथ अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रही है। मन्दिर समिति के अध्यक्ष पदमचंद जैन बिलाला के अनुसार शिविर में आचार्य शशांक सागर महाराज का सानिध्य भी प्राप्त हो रहा है तो वही समाज के बच्चे, युवा,बुजुर्ग व महिलाएं लाभान्वित भी हो रहे हैं। शुक्रवार को शिविर में दीप प्रज्वलन स्वाध्याय प्रेमी अशोक कुमार अंजू बाकलीवाल परिवार कान्ति ऑफसेट वालों द्वारा किया गया। शिविर संयोजक सुरेश शाह व राजेन्द्र ठोलिया के अनुसार शिविर में पांच आध्यात्मिक कक्षाएं विधिवत रूप से संचालित हो रही हैं तो लगभग 125 सम्भागी शिविर में भाग ले रहे हैं इस अवसर पर मंदिर समिति के पदाधिकारीयों के साथ संयुक्त मंत्री सुनील सेठी, मिश्री लाल काला, जे के जैन, शुभम्, अनिकेत, चन्द्र मणि, आशा पाटनी, अल्पी काला, धर्म जागृति संस्थान संरक्षक ज्ञानचंद जैन आदि ने सभी का भाव भीना स्वागत व अभिनंदन किया तो इस अवसर पर आचार्य शशांक सागर महाराज ने कहा कि युवाओं को हर समय धर्म की ध्वजा थामने के लिए तैयार रहना चाहिए। वर्तमान युग युवाओं का युग है उन्हें बुजुर्गो के होश से स्वयं के जोश को मिलाकर धर्म और धार्मिक क्रियायो में अग्रसर रहना चाहिए।

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर द्वारा पुलिस थाना गढ़ी मे अस्थाई जल मन्दिर का किया शुभारंभ

महावीर इंटरनेशनल के गवर्निंग काउंसिल सदस्य अजीत कोठिया ने बताया की इस अवसर पर आयोजित संक्षिप्त जल समारोह की अध्यक्षता सी बी इ ओ महेन्द्र सिंह समाधियां ने की, मुख्य अतिथि डा.विपिन बुनकर, विशिष्ट अतिथि कांस्टेबल लोकेश चंद्र, कांस्टेबल हेमेंद्र सिंह थे।

परतापुर. शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर द्वारा पुलिस थाना गढ़ी परिसर में आने वाले लोगों एवम उधर से गुजरने वाले राहगीरों को भीषण गर्मी से बचाने पेय जल उपलब्ध कराने अस्थायी जल मन्दिर का शुभारंभ किया गया। महावीर इंटरनेशनल के गवर्निंग काउंसिल सदस्य अजीत कोठिया ने बताया की इस अवसर पर आयोजित संक्षिप्त जल समारोह की अध्यक्षता सी बी इ ओ महेन्द्र सिंह समाधियां ने की, मुख्य अतिथि डा.विपिन बुनकर, विशिष्ट अतिथि कांस्टेबल लोकेश चंद्र, कांस्टेबल हेमेंद्र सिंह थे। प्रारंभ में सचिव रामभरत चेजारा ने सभी का स्वागत करते हुए घटते जल संसाधनों पर चर्चा की। आयोजन मे रानू समाधियां, कांस्टेबल भूपेंद्र सिंह, विराट समाधियां, संतोष बुनकर, तथा सुमन राठौड़ ने सहयोग दिया। महेन्द्र सिंह समाधियां ने महावीर इंटरनैशनल गढ़ी परतापुर के मानव सेवा कार्यों की सराहना करते हुए सचिव रामभरत चेजारा एवं गवर्निंग काउंसिल सदस्य अजीत कोठिया के समर्पण की सराहना की। संचालन रामभरत चेजारा ने किया, आभार सुमन राठौड़ ने व्यक्त किया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

श्री महावीर दिगंबर जैन सीनियर सेकेंडरी स्कूल का राजस्थान बोर्ड कक्षा 12 वीं का परीक्षा परिणाम शत -प्रतिशत रहा

शाबाश इंडिया। विज्ञान वर्ग में छात्रा पलक भोजवानी ने 95.80 % अंक ,शिफा खातून ने 93.40% अंक और आयशा सिद्दीकी ने 92.60% अंक प्राप्त किए। वाणिज्य वर्ग की छात्रा रिंकू ने 92.80 % अंक,पलक नागर ने 90.80% अंक और आस्था सैनी ने 90% अंक प्राप्त किए एवं कला वर्ग में छात्रा दिशा कंवर ने 91.80% अंक प्राप्त किए। विद्यालय आचार्य श्रीमती रेनू गोस्वामी एवं प्रबंध कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष उमरावमल संघी, मानद मंत्री सुनील बख्शी एवं अन्य सदस्यों ने छात्र-छात्राओं को उनकी उपलब्धि के लिए उनके अभिभावकों को बधाई देते हुए विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

श्रीराम कथा के शुभारंभ पर निकली तुलसी यात्रा

मानस की चौपाइयो से बनाएं देश व परिवार को संस्कारवान : डॉ.सुमनानंद गिरी

जयपुर. शाबाश इंडिया। अभिनव ज्ञानामृत चैरिटेबल ट्रस्ट के बैनर तलें श्री श्री 1008 श्री महामंडलेश्वर आचार्य नर्मदा शंकर पुरी जी महाराज,निरंजनी अखाड़ा की प्रेरणा से श्रीश्री 1008 रामषरण दास जी महाराज व कौशल्या दास जी महाराज के पावन सानिध्य में जयपुर के सानिध्य` में पंच दिवसीय मानस पंचामृत श्री राम कथा का शुभारंभ शुक्रवार से रेलवे स्टेषन रोड,राम मंदिर के पास कौषल्या दास जी की बगीची में हुआ। इस मौके पर रामकथा को सुन श्रद्धालु भाव विभोर हो उठे।

ज्ञानतीर्थ पर 27 को ज्ञानसागर आचार्य पदारोहण समारोह

ज्ञानतीर्थ एवम मुरैना शहर में होंगे विभिन्न कार्यक्रम

मनोज जैन. शाबाश इंडिया

मुरैना। नायक सराकों के राम एवम सराकोद्धारक के नाम से विश्व में ख्याति प्राप्त आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का 12बां आचार्य पदारोहण दिवस समारोह 27 मई को मुरैना नगर एवम ज्ञानतीर्थ जैन मंदिर में विभिन्न अयोजनों के साथ हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जायेगा ।एबी रोड (धौलपुर -आगरा) हाइवे पर स्थित श्री दिगम्बर जैन ज्ञानतीर्थ क्षेत्र पर विराजमान बाल ब्रह्मचारिणी बहिन अनीता दीदी द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी परम्परा में सिंहरथ प्रवर्तक, त्रिलोकतीर्थ प्रणेता पंचम पट्टाचार्य विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज की समाधि के पश्चात पूज्य गुरुदेव सराकोद्धारक उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज को अतिशय क्षेत्र बड़ागांव में विधि विधान पूर्वक 27 मई 2013 को आचार्य पद से विभूषित किया गया था। पूज्य गुरुदेव की स्मृतियों को याद करते हुए इस पुनीत दिवस पर दो दिवसीय समारोह का आयोजन 26 एवम 27 मई को आयोजित किया जा रहा है ।प्रथम दिन रविवार 26 मई को श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर मुरेना में गुरुभक्तों द्वारा अरिहंत प्रभु का अभिषेक, शांतिधारा एवम विशेष पूजन अर्चना की जायेगी। शाम को 07 बजे से भक्तामर दीप महा अर्चना, भजन गायन, भजनों पर नृत्य प्रतियोगिता, महा आरती एवम गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया है। सोमवार 27 मई को ज्ञानतीर्थ जैन मंदिर में प्रातः 07 बजे श्री जिनेंद्र प्रभु का जलाभिषेक, शांतिधारा, नित्य नियम पूजन, पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की अष्ट द्रव्य से पूजन, चरणों की बंदना, आरती एवम गुणानुवाद सभा का आयोजन होगा।

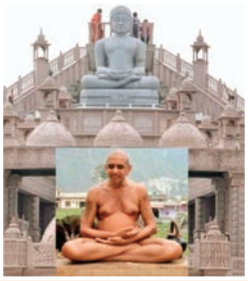

आर्यिका विज्ञाश्री माताजी का संघ सहित नेमीसागर कालोनी में मंगल प्रवेश

जयपुर. शाबाश इंडिया। परम पूज्य आर्यिका 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ का शुक्रवार को नेमीसागर कालोनी में मंगल प्रवेश हुआ। इससे पूर्व आर्यिका संघ प्रातः निर्माण नगर जैन मंदिर से बिहार कर, नेमीसागर कालोनी में पहुंचे। नेमीसागर कालोनी के जैन समाज द्वारा बैंड बाजे के साथ कालोनी के विभिन्न मार्गो से जुलूस निकाला गया। श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन समाज समिति के अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि समिति द्वारा आर्यिका संघ का पाद प्रक्षालन किया गया। अनिल जैन धुआं वालो एवं परिवार द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया एवं डी सी जैन परिवार द्वारा शास्त्र भेंट किया गया। इस अवसर पर आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने अपने प्रवचन में कहा कि सेकडो बार पूजा करने अथवा माला फेरने से अच्छा है कि कुछ क्षण पूरे मन से प्रभु का ध्यान लगाया जाए। उन्होंने बताया कि किसी भी कार्य का बार बार अभ्यास ही स्वाध्याय है। सायंकाल में आर्यिका संघ के सान्निध्य में आनंद यात्रा आयोजित हुई एवं रात्रि में श्रमण संस्कृति संस्थान एवं महिला महासमिति द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविर में बालबोध एवं द्रव्य संग्रह का अध्ययन किया गया।

अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ को जयपुर चातुर्मास के लिए श्रीफल भेंट करने हेतु आज (शनिवार) रवाना होगा 51 सदस्यीय श्रद्धालुओं का दल

जयपुर. शाबाश इंडिया

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य108श्री विद्यासागर महाराज के सुयोग्य शिष्य अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के जयपुर में चातुर्मास करने हेतु निवेदन करने के लिए सकल दिगंबर जैन समाज जयपुर के बैनर तले 51 सदस्यीय दल खजुराहो के लिए रवाना होगा। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति मीरा मार्ग के अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि दल शनिवार, 25 मई को सायंकाल 5 बजे मीरा मार्ग के श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से रवाना होगा। इस दल में राजस्थान जैन सभा, राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर,दिगम्बर जैन महासमिति, दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फैडरेशन, श्री वीर सेवक मण्डल, श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ प्रबंध समिति, श्री दिगम्बर जैन पदयात्रा संघ,श्रमण संस्कृति संस्थान, मानसरोवर सम्भाग के मंदिरों के पदाधिकारियों, युवा एवं महिला संगठनों सहित अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी, कई मुनि भक्त एवं गणमान्य श्रेष्ठीजन शामिल होंगे।

नचिकेतन पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय अभिभावक-अध्यापक सम्मेलन का समापन

रमेश भार्गव. शाबाश इंडिया

ऐलनाबाद। नचिकेतन पब्लिक स्कूल में 2024-25 सत्र की प्रथम दो दिवसीय द्यअभिभावक-अध्यापक सम्मेलन का शुभारंभ 23 मई को किया गया। इस आयोजन का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप जलाकर किया गया। सम्मेलन के प्रथम दिवस में कक्षा नर्सरी से प्रथम तथा सातवीं से बाहरवीं व दूसरे दिन कक्षा दूसरी से छट्ठी के छात्र-छात्राओं के अभिभावकों से विद्यार्थियों के मासिक परीक्षा परिणाम, शिक्षा व सुरक्षा जैसे अहम विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। गर्मी की अधिकता के बावजूद भी अभिभावकों ने बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए इस चरण में 85% उपस्थिति दर्ज करवाई।

अत्यंत दुख के साथ सूचित किया जाता है कि मेरे बहनोई श्रीमान कपूरचंद जी जैन शाह सोनवा वालों का स्वर्गवास दिनांक 24/5/ 2024 हो गया है जिनकी तीये की बैठक दिनांक 26/05/2024 को9:30 चंद्रशेखर आजाद नगर जैन मंदिर भीलवाड़ा में रखी गई है

प्रेमचंद जैन भागचंद नाथू लाल ताराचंद सुरेश महावीर विमल समस्त बाकलीवाल परिवार पीपला वाले 117/326 थडी मार्केट अग्रवालफार्म मानसरोवर जयपुर🙏🙏🙏

मोबाईल नम्बर- 8290773960, 9511549026, 978539589।

पुरस्कार पाकर खिले चेहरे...

अंतिम दिन केंडिड फोटोग्राफी के गुर सीखे

उदयपुर. शाबाश इंडिया

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की ओर से चल रही चार दिवसीय फोटोग्राफी कार्यशाला का समापन शुक्रवार को हुआ। इससे पूर्व अंतिम दिन पहले सत्र में प्रतिभागियों ने बागौर की हवेली और आसपास के पुरावैभव को कैमरों में कैद किया। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर के निदेशक फुरकान खान ने बताया कि कार्यशाला में शहर के वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट राकेश शर्मा ''राजदीप'' और सहयोगी खुशवंतसिंह सरदलिया ने प्रतिभागियों को ऑन द स्पॉट केंडिड फोटो शूट टिप्स दिए। दूसरे सत्र में पोस्ट प्रोडक्शन की तकनीक पर चर्चा के बाद प्रतिभागियों ने कार्यशाला के अनुभव साझा किए। समापन अवसर पर सभी प्रतिभागियों को केंद्र की ओर से सहभागिता प्रमाण पत्र दिए गए। साथ ही पोर्ट्रेट, टेबल टॉप, मॉडल शूट जैसी फोटोग्राफी की विभिन्न विधाओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। **ये सब बने विजेता:** पोर्ट्रेट फोटोग्राफी में प्रथम उत्कर्ष हाड़ा, द्वितीय विजितवीर सिंह, तृतीय शैलेन्द्र ढड्ढ़ा रहे। इस श्रेणी में सांत्वना पुरस्कार शेख बुशरा को मिला। प्रॉडक्ट फोटोग्राफी में प्रथम उत्कर्ष हाड़ा, द्वितीय डिम्पल कुमार, तृतीय शेख बुशरा रहे वहीं, लव पुरोहित को सांत्वना पुरस्कार मिला। इसी तरह, फैशन फोटोग्राफी में प्रथम डिम्पल कुमार, द्वितीय मयंक शर्मा, तृतीय लव पुरोहित रहे। सांत्वना पुरस्कार राकेश भट्ट को मिला। बेस्ट फीडबैक पुरस्कार चाहत बालचंदानी को प्रदान किया गया। समापन समारोह में कार्यक्रम अधिकारी पवन अमरावत, कार्यशाला प्रभारी हेमंत मेहता सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। संचालन सिद्धांत भटनागर ने किया। रिपोर्ट/फोटो: राकेश शर्मा 'राजदीप'

राजस्थान की अमृत रूपी सब्जी है कैर सांगरी

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर।
9828011871

आज के इस लेख में मैं एक ऐसी सब्जी के बारे में जानकारी साझा कर रहा हूँ जिसकी भारत और विदेशों में बहुत मांग है। मैं बात कर रहा हूँ कैर-सांगरी की जो कभी गाँवों तक ही सीमित थी, लेकिन अब यह दुनिया के कोने-कोने तक पहुँच चुकी है। न केवल अपने बेहतरीन स्वाद के कारण बल्कि खास तौर पर इसलिए क्योंकि यह पूरी तरह से प्राकृतिक रूप से पैदा होती है। वर्तमान में सांगरी के साथ-साथ कैर भी हर किसी की पहली पसंद बन गई है।

क्यों है इतना खास:

सांगरी और कैर प्राकृतिक रूप से पैदा होते हैं। इसके लिए कोई खेती नहीं की जाती। सांगरी खेजड़ी के वृक्ष पर उगती है और कैर झाड़ियों पर उगती है। यह सब्जी पूरी तरह से शुद्ध है क्योंकि इसमें किसी भी तरह की खाद या दवा का इस्तेमाल नहीं किया जाता।

सूखी सब्जी के रूप में पहचान:

वैसे तो राजस्थान में कैर-सांगरी सीजन में मिलती है, तब इसकी सब्जी और अचार बनाया जाता है, लेकिन जब कैर-सांगरी सूख जाती है, तो उसके बाद बनाई गई सब्जी को प्राथमिकता दी जाती है, क्योंकि वह अधिक स्वादिष्ट होती है।

कैसे उगती है सागरी:

गर्मी बढ़ने पर खेजड़ी के वृक्ष पर सांगरी आने लगती है। इसी तरह भीषण गर्मी में कैर की पैदावार बढ़ जाती है। कैर-सांगरी तब उगती है जब तापमान 40-42 डिग्री के बीच पहुंच जाता है। प्राकृतिक रूप से पैदा होने के कारण यह किसी औषधि से कम नहीं है। सांगरी-कैर में विटामिन ए, कैल्शियम, आयरन और कार्बोहाईड्रेट होते हैं। ये एंटी-ऑक्सीडेंट भी होते हैं। कैर के डंठल से पाउडर भी बनता है जो कफ और खांसी में काम आता है।

सूखे मेवे से भी जादा होती है कीमत:

कैर-सांगरी पश्चिमी राजस्थान में गर्मियों में उगाई जाती है। इस क्षेत्र में जब सांगरी कच्ची होती है तो स्थानीय स्तर पर इसकी कीमत 100-120 रुपए प्रति किलो तक होती है। कैर भी इसी कीमत पर मिलती है। सूखने के बाद कैर-सांगरी की कीमत उत्पादन क्षेत्र में ही करीब 5 गुना बढ़ जाती है। जबकि दूसरे राज्यों में यह 1500-1800 रुपए प्रति किलो बिकती है। जबकि ऑनलाइन कैर-सांगरी की कीमत 2200-2500 रुपए प्रति किलो तक हैं।

लाचार रोगी लचर सुविधाएं

विजय गर्ग

धीरे-धीरे सरकारी अस्पतालों की स्थिति में सुधार हो रहा है, मगर देश की जनसंख्या को देखते हुए यह सुधार काफी नहीं है। इस दौर में भी देश के अनेक सरकारी अस्पतालों में कर्मचारियों की भारी कमी है। इतना विकास होने के बावजूद जिला सरकारी अस्पतालों में सभी परीक्षण नहीं हो पाते हैं। इस वजह से रोगियों को निजी डाक्टरों से परीक्षण कराने पड़ते हैं। कई बार सरकारी सेवा में कार्यरत डाक्टर लापरवाही बरतते हैं, तो कई बार सरकारी डाक्टर संसाधनों के अभाव में भी बेहतर काम नहीं कर पाते हैं। अनेक जगहों पर सरकारी अस्पतालों में वर्षों तक मशीनें खराब पड़ी रहती हैं। डाक्टरों द्वारा विभाग को कई पत्र लिखने के बाद भी व्यवस्था में सुधार नहीं होता है। ऐसे माहौल में योग्य डाक्टरों का उत्साह कम हो जाता है। इसलिए लापरवाह डाक्टरों पर कार्रवाई और ईमानदार डाक्टरों के समर्पण को व्यवस्था की मार से बचाने की अपेक्षा स्वाभाविक है। हाल ही में दिल्ली के राममनोहर लोहिया अस्पताल में भ्रष्टाचार का खुलासा हुआ। इस अस्पताल के दो चिकित्सकों समेत ग्यारह लोगों को गिरफ्तार किया गया। उन पर रिश्वत लेकर कुछ खास कंपनियों के उत्पाद को बढ़ावा देने का आरोप है। उन पर मरीजों से भर्ती करने के लिए अवैध रूप से वसूली का भी आरोप है। जब देश की राजधानी के अस्पतालों में भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है, तो दूर-दराज के अस्पतालों की स्थिति का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। पिछले दिनों नीति आयोग ने स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च बढ़ाने की जरूरत रेखांकित की थी। यह कटु सत्य है कि हमारे देश में आबादी की जरूरत के हिसाब से स्वास्थ्य सेवाएं दयनीय स्थिति में हैं। भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में जीडीपी का मात्र डेढ़ फीसद खर्च होता है। दुनिया के कई देश स्वास्थ्य सेवाओं की मद में आठ से नौ फीसद तक खर्च कर रहे हैं। कोराना काल में हमारे देश की लचर स्वास्थ्य सेवाओं की पोल खुल गई थी। अगर हमारे देश का स्वास्थ्य ढांचा बेहतर होता, तो कोराना काल में जनता को ज्यादा सुविधाएं दी सकती थीं। उस वक्त जहां एक ओर अनेक डाक्टर कई तरह के खतरे उठा कर अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे थे, वहीं दूसरी और अनेक निजी अस्पतालों का ध्यान आर्थिक लाभ कमाने पर था। इस दौर में भी जब गंभीर रोगों से पीड़ित मरीजों के लिए अस्पतालों में स्ट्रेचर जैसी मूलभूत सुविधाएं न मिल पाएं, तो देश की स्वास्थ्य सेवाओं पर सवाल उठना लाजमी है। इस प्रगतिशील दौर में भी ऐसी अनेक खबरें प्रकाश में आई हैं कि अस्पताल गरीब मरीज के शव को घर पहुंचाने के लिए एंबुलेंस तक उपलब्ध नहीं करा पाए । गौरतलब है कि पिछले दिनों 'सेंटर फार डिजीज डाइनामिक्स, इकोनामिक्स ऐंड पालिसी' (सीडीडीईपी) द्वारा जारी एक रपट में बताया गया था कि भारत में लगभग छह लाख डाक्टरों और बीस लाख नर्सों की कमी है। भारत में 10, 189 लोगों पर एक सरकारी डाक्टर है, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक हजार लोगों पर एक डाक्टर की सिफारिश की है। इसी तरह हमारे देश में 483 लोगों पर एक नर्स है। रपट के अनुसार भारत में एंटीबायोटिक दवाइयां देने के लिए प्रशिक्षित कर्मियों की कमी है, जिससे जीवन रक्षक दवाइयां मरीजों को नहीं मिल पाती हैं। हमारे देश में व्यवस्था की नाकामी और विभिन्न

वातावरणीय कारकों के कारण बीमारियों का प्रकोप ज्यादा होता है। भारत में डाक्टरों की उपलब्धता विएतनाम और अल्जीरिया जैसे देशों से भी बदतर है। हमारे देश में इस समय लगभग 7.5 लाख सक्रिय डाक्टर हैं। डाक्टरों की कमी के कारण गरीब लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं मिलने में देरी होती है। यह स्थिति अंततः पूरे देश के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण पर गठित संसदीय समिति ने पिछले दिनों जारी अपनी रपट में माना था कि हमारे देश में आम लोगों को समय पर स्वास्थ्य सुविधाएं न मिलने के अनेक कारण हैं। इसलिए स्वास्थ्य सुविधाओं को और तीव्र बनाने की जरूरत है। दरअसल, स्वास्थ्य सेवाओं के मुद्दे पर भारत अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है। हालात ये कि जनसंख्या वृद्धि के कारण बीमार लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। गरीबी और गंदगी के कारण विभिन्न संक्रामक रोगों से पीड़ित लोग इलाज के लिए तरस रहे हैं। गौरतलब है कि चीन, ब्राजील और श्रीलंका जैसे देश स्वास्थ्य के क्षेत्र में हमसे ज्यादा खर्च करते हैं। जबकि पिछले दशक में भारत की आर्थिक वृद्धि दर चीन के बाद शायद सबसे अधिक रही है। इसलिए पिछले दिनों योजना आयोग की एक विशेषज्ञ समिति ने भी यह सिफारिश की थी कि सार्वजनिक चिकित्सा सेवाओं के लिए आबंटन बढ़ाया जाए। विडंबना है कि भारत में स्वास्थ्य योजनाएं भी लूट-खसोट की शिकार हैं। दूसरी ओर, निजी अस्पताल और डाक्टर चांदी काट रहे हैं। पिछले दिनों भारतीय चिकित्सा परिषद ने डाक्टरों द्वारा दवा कंपनियों से लेने वाली विभिन्न सुविधाओं को देखते हुए एक आचार संहिता के तहत डाक्टरों को दी जाने वाली सजा की रूपरेखा तय की थी। मगर अब भी डाक्टर दवा कंपनियों से विभिन्न सुविधाएं प्राप्त कर रहे हैं और इसका बोझ रोगियों पर पड़ रहा है। आज यह किसी से छिपा नहीं है कि दवा कंपनियां अपनी दवाइयां लिखवाने के लिए डाक्टरों को महंगे उपहार देती हैं। इसलिए डाक्टर इन कंपनियों की दवाइयां बिकवाने की जी-तोड़ कोशिश करते हैं। हद तो तब हो जाती है जब कुछ डाक्टर अनावश्यक दवाइयां लिखकर दवा कंपनियों को दिया वचन निभाते हैं। इस व्यवस्था में डाक्टर के लिए दवा कंपनियों का हित रोगी के हित से ऊपर हो जाता है। पर, जो डाक्टर सेवाभाव से मरीजों के हितों के लिए रात-दिन एक कर रहे हैं उन पर भला कौन अंगुली उठाएगा। आज अनेक डाक्टर गांवों की तरफ रुख नहीं करते हैं। दरअसल, इस दौर स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली का खमियाजा ज्यादातर बच्चों, महिलाओं और बूढ़े लोगों को उठाना पड़ रहा है। इसी वजह देश के अनेक राज्यों में जहां एक ओर बच्चे विभिन्न गंभीर बीमारियों के कारण काल के गाल में समा रहे हैं, तो दूसरी ओर महिलाओं को भी बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं। इस मामले में वृद्धों का हाल तो और दयनीय है। अनेक परिवारों में वृद्धों को मानसिक संबल नहीं मिल पाता। साथ ही उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कम हो जाती है। ऐसी स्थिति में उन्हें जरूरी स्वास्थ्य सेवाएं भी मुहैया न हों तो उनका जीवन नरक बन जाता है। इसलिए सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं का चुस्त-दुरुस्त और ईमानदार होना न केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी जरूरी है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि अभी तक ऐसा नहीं हो पाया है। देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु बदहाल सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं को पटरी पर लाने के लिए एक गंभीर पहल की जरूरत है।

विजय गर्ग :सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

त्रि-दिवसीय संयम शताब्दी महोत्सव 26 मई रविवार से

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन कोकिला विचक्षणश्रीजी म.सा. का संयम शताब्दी त्रिदिवसीय महोत्सव 26 मई रविवार से 28 मई मंगलवार तक गलता गेट, मोहनबाड़ी स्थित मंदिर में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, युवा परिषद, महिला परिषद और श्री ज्ञान विचश्रण महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाला यह त्रिदिवसीयल्ल महोत्सव मरूधर ज्योति परम पूज्य श्री मणिप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में मनाया जाएगा। संघ के अध्यक्ष प्रकाशचन्द लोढ़ा और सचिव देवेंद्र मालू ने बताया कि महोत्सव के पहले दिन रविवार को स्नात्रपूजा एवं श्री दादा गुरुदेव पूजा का भव्य आयोजन सुप्रसिद्ध गायक कलाकार राहुल झाबक रायपुर वाले के भजनों से सम्पन्न होगा। कार्यक्रम के दूसरे दिन श्री विचक्षण गुणानुवाद एवं भक्ति संगीत प्रातः 9 बजे से होगा। इसके बाद मंगलवार 28 मई को सामूहिक सामायिक से कार्यक्रम का समापन होगा।